International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070
Impact Factor: RJIF 5.22
www.socialsciencejournal.in
Volume 4; Issue 6; November 2018; Page No. 33-34

बी•एड• शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक अभिक्षमता का उनकी वैयक्तिक पृष्ठभूमि के सन्दर्भ में अध्ययन।

अंकिता
शोध छात्रा, शिक्षा संकाय, एस•एस•जे• परिसर, अल्मोड़ा, कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल, उत्तराखंड, भारत।

सारांश
वर्तमान जॉच में बी•एड• शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक अभिक्षमता पर उनकी वैयक्तिक पृष्ठभूमि के आधार पर पड़ने वाले प्रभाव को खोजने का प्रयास किया गया है। बी•एड• शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों के रूप में अध्ययनरत छात्रों में से 100 शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श विधि से किया गया है। इस अध्ययन हेतु कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल से सम्बद्ध ऊधम सिंह नगर जिले के बी•एड• महाविद्यालयों को आकस्मिक नमूना विधि से लिया गया है। अध्ययन में डहिया एवं सिंह (2017) द्वारा विकसित टीचिंग एप्टीट्यूट टेस्ट मापनी को प्रयोग में लाया गया है।

मूल शब्द : प्रशिक्षणार्थियों, शैक्षिक अभिक्षमता, वैयक्तिक।

प्रस्तावना
किसी भी देश एवं समाज के सामाजिक–आर्थिक विकास के लिए जनसंख्या का गुणात्मक होना आवश्यक है, और यही गुणात्मक पहलू सामाजिक–आर्थिक विकास के सन्दर्भ में देश को सुदृढ़ स्थिति तक पहुँचाता है। शिक्षा, मानव उत्पादकता तथा गुणात्मकता बढ़ाने का एक ऐसा ही एक साधन है। शिक्षा के माध्यम से देश के भावी युवाओं तथा नागरिकों को इस योग्य बनाया जाता है कि वे वैश्वीकरण के इस युग में किसी से भी पीछे न रहें। मानव एक संघर्षशील प्राणी है, जिसके छोटे से शरीर में बुद्धि एक ऐसी संरचना है, जिसके बल पर मनुष्य अपने संघर्षों के मध्य आने वाली समस्याओं का पलभर में निस्तारण कर लेता है। मानव में विद्यमान समस्या समाधान की यह शक्ति विवेक पर निर्भर होती है, जो मनुष्य को संसार के अन्य प्राणियों से अलग करती है। अपनी विवेकीय शक्तियों का सही समय एवं सही जगह पर प्रयोग करने की शक्ति मनुष्य में शिक्षा के माध्यम से विकसित होती है। अतः शिक्षा ही मानव जीवन की आधारशिला है। मनुष्य को सफलता मार्ग पर ले जाने में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है। शिक्षा द्वारा मानव की जन्मजात शक्तियों का विकास होता है। और उसके ज्ञान तथा कला कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन आता है। शिक्षा मानव को सभ्य, संस्कारवान एवं योग्य नागरिक बनाती है, साथ ही व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र का विकास करती है। शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है, जो मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का स्वाभाविक व सामंजस्यपूर्ण विकास करती है। मनुष्य को अपने वातावरण के साथ सांमजस्य स्थापित करने में सहायता प्रदान करती है, साथ ही मानव को जीवन और नागरिकता के कर्त्तव्यों और दायित्वों को भलीभाँति निर्वहन करने के लिए तैयार करती है। शिक्षा मानव व्यवहार, विचार और दृष्टिकोण में ऐसा सकारात्मक परिमार्जन करती है– जो समाज, देश और सम्पूर्ण संसार के लिए हितकर एवं समाजपयोगी होती है। शिक्षा को मनुष्य के सर्वांगीण विकास का महत्वपूर्ण कारक माना गया है।

शिक्षा वह प्रकाश है जिसके द्वारा बालक का सर्वांगीण विकास कर उसके स्वर्णिम भविष्य को प्रकाशयुक्त किया जाता है। शिक्षा रूपी प्रकाश पुंज की विभिन्न ज्ञान धाराओं से शिक्षक–प्रशिक्षणाथियों को अपने शिक्षकों द्वारा ज्ञान प्रदान किया जाता है। शिक्षक के इस दायित्व को दृष्टिगत रखते हुए शिक्षक–प्रशिक्षणाथियों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के उद्भव एवं उसके समयबद्ध परिष्करण का सम्पूर्ण नैतिक दायित्व नितान्त आवश्यक रूप से शिक्षक के कंधों पर अवस्थित है। शिक्षक के व्यक्तित्व की शिक्षक–प्रशिक्षणाथियों के जीवन में अमिट छाप पड़ती है अतः शिक्षक को संघर्षशील व्यक्तित्व का होना चाहिए। संघर्षशीलता के दौरान शिक्षक–प्रशिक्षणार्थी न केवल अपने ज्ञान का परिष्करण करता है बल्कि अपने व्यवसाय कौशलों में भी दक्षता प्राप्त करता है यह दक्षता शिक्षक–प्रशिक्षणाथियों के अन्दर आत्म संतुष्टि के बोध का अनुभव कराती है जिसके फलस्वरूप संतुष्टि का यह तत्व शिक्षक–प्रशिक्षणाथियों के सर्वांगीण विकास में सहायक सिद्ध होता है इसके विपरीत शिक्षक की विकृत मानसिकता, विकृत व्यवहार, चंचल मन एवं उच्छृंखलता शिक्षक–प्रशिक्षणाथियों के समुचित विकास में व्यवधान उत्पन्न करती है और उनमें नकारात्मक शक्ति का प्रवाह करती है। शिक्षा के क्षेत्र में अभिक्षमता एक महत्वपूर्ण पद है जिसका अर्थ किसी खास विषय या क्षेत्र में ज्ञान, अभिरूचि कौशलता आदि विकसित करने की क्षमता से होता है।

अभिक्षमता परीक्षण द्वारा अभिक्षमता का मापन करके उत्तम शिक्षक–प्रशिक्षणाथियों का चयन किया जाता है। ऐसा करके उनके लिए एक साथ शिक्षक–प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाती है एवं अभिक्षमता परीक्षण द्वारा शिक्षक–प्रशिक्षणाथियों की समस्याओं का निदान किया जाता है। शिक्षक–प्रशिक्षणाथियों में अभिक्षमता परीक्षण का प्रयोग करके उनमें अभिक्षमता की कमी को पहचाना जा सकता है। अभिक्षमता परीक्षण का प्रयोग शिक्षक–प्रशिक्षणाथियों एवं स्कूल परामर्शदाताओं द्वारा कुछ विशेष क्षेत्रों जैसे कला, चिकित्साशास्त्र आदि में पुनःनिवेशन प्रदान करने के लिए किया जाता है। इस तरह के पुनःनिवेशन के आधार पर वे स्वयं ही यह निर्णय ले पाते हैं कि उन्हें अमुख कार्यक्रम में भाग लेना चाहिए या नहीं।

अभिक्षमता परीक्षण के आधार पर शिक्षक–प्रशिक्षणार्थी भविष्य में अमुख विषय या क्षेत्र में निष्पादन के बारे में पूर्वानुमान लगा पाते हैं। अभिक्षमता परीक्षण का प्रयोग कर स्वयं का श्रेणीकरण कर पाते हैं तथा उसी के अनुसार उनका नियोजन करने में मदद मिलती है। शिक्षक–प्रशिक्षणार्थी प्रशिक्षण काल के दौरान छात्रों को शिक्षा प्रदान के कौशलों को सीखने में अवश्यमेव रूचिपूर्वक रूप से संलग्न रहता है वह समाज में व्याप्त अव्यवस्थाओं से स्वयं परिचित करता है और अवरोधों को समाप्त करने में संधर्षरत रहता है परंतु अयोग्य असक्षम

शिक्षक–प्रशिक्षणार्थी अपने कार्य को बोझ समझते हुए उसके प्रति उदासीनता बरतते हैं। फलस्वरूप उनके व्यक्तित्व में बदलाव आने लगता है और धीरे–धीरे प्रशिक्षण प्रक्रिया में विराम की स्थिति आने लग जाती है । वर्तमान युग में हालांकि शिक्षक–प्रशिक्षणार्थी को लगभग सभी शिक्षण योग्यताओं को सीखने की सुविधाएँ प्रदान की हैं परन्तु इतना सब होते हुए भी शिक्षण संस्थाओं की हालत में सुधार नहीं हुआ है। अतः शिक्षक–प्रशिक्षणार्थी के योग्यता, अभिक्षमता को दृष्टिगत रखते हुए यह आवश्यक हो जाता है कि इस क्षेत्र में व्यापक अध्ययन किए जाएं। वर्तमान समय में राष्ट्र की सम्पन्नता इस बात भी पर निर्भर करती है कि वहाँ का मानव संसाधन कितना सम्पन्न है।

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध के उद्देश्य निम्नलिखित प्रकार से हैं।

- बी0 एड0 शिक्षक–प्रशिक्षणाथियों की शैक्षिक अभिक्षमता का अध्ययन करना।
- बी0 एड0 शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक अभिक्षमता का उनकी वैयक्तिक पृष्ठभूमि के सन्दर्भ में अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

- प्रस्तुत शोध के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए निम्नलिखित परिकल्पनाओं को सम्मिलित किया गया।
- बी0एड0 शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक अभिक्षमता में वैयक्तिक पृष्ठभूमि के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- उपर्युक्त परिकल्पना की जाँच हेतु निम्नलिखित उपपरिकल्पनाओं का निर्माण किया गया।
- बी0 एड0 शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक अभिक्षमता में अध्ययन संस्थान के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- बी0 एड0 शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक अभिक्षमता में लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- बी0 एड0 शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक अभिक्षमता में निवास स्थान के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- बी0 एड0 शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक अभिक्षमता में विषय वर्ग (कला/विज्ञान) के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- बी0 एड0 शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक अभिक्षमता में शैक्षिक योग्यता (स्नातक/परास्नातक) के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिका 1: सांख्यिकी विश्लेषण

स्तर	N	M	S.D	t	सार्थकता स्तर
पुरूष	50	28•18	12•30	1•23	0•05
महिला	50	31•58	15•26		
शहरी	50	28•66	15•95	0•51	0•05
ग्रामीण	50	26•54	24•54		
कला	50	26•32	12•09	0•13	0•05
विज्ञान	50	26•64	12•03		
स्नातक	50	25•98	09•33	2•02	0•05
परास्नातक	50	30•08	10•87		

निष्कर्ष

बी•एड• शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों में शैक्षिक अभिक्षमता एवं शिक्षण सम्बन्धी समस्याओं की उनकी वैयक्तिक पृष्ठभूमि के सन्दर्भ में लिंग, निवास, विषय वर्ग, शैक्षिक योग्यता (स्नातक/परास्नातक) के आधार पर अध्ययन करने पर प्राप्त टी–मान को 0•5 स्तर पर देखने के पश्चात् यह निष्कर्ष प्राप्त किया गया कि लिंग (पुरूष–महिला), निवास (शहरी–ग्रामीण), विषय वर्ग (कला–विज्ञान), शैक्षिक योग्यता (स्नातक/परास्नातक) के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है। कौर एंड सिंह (2012) अतः बी•एड• शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक अभिक्षमता, शिक्षण सम्बन्धी समस्याएं उनकी वैयक्तिक पृष्ठभूमि से अधिक प्रभावित नहीं होती। लता(2017)

सन्दर्भ सूची

1. अप्पादुरई आर और देवी सरला के0:– ''टीचिंग एप्टीट्यूड एंड टीचर एटीट्यूड ऑन टीचर इफीकेसी।'' इंटरनेशनल जरनल ऑफ इन्नोवोटिव रिसर्च इन एजूकेशन एण्ड साइन्स। 2015; 4(10):10252-10261.
2. एसवर्न एम0:– ''एजूकेशनल प्रॉब्लम एंड मीडिया एवेयरनेस अमंग द बी0एड0 टीचर ट्रेनर इन करौर डिस्ट्रिक।''इंटरनेशनल जरनल ऑफ एडवान्सड एजूकेशन एंड रिसर्च। 2016; 1(8):07.
3. जॉर्ज बेसॉक एंड पिल्ली ऑल्गा :– ''टीचर ट्रेनर्स व्यूस ऑन द इफेक्टिवनेस ऑफ टीचिंग प्रक्टिस कोर्स।'' 2012; 8:812-817.
4. कान्ता रवि :– ''ए स्टडी ऑफ टीचिंग एप्टीट्यूड एंड रिसपॉन्सब्लिटी फीलिंग ऑफ टीचर ट्रेनर इन रिलेशनसिप टू दियर सेक्स एंड लोकल एकेडमिक रिसर्च इन्टर्शन।'' 2011; 1(2).
5. कौर कुशवंत एंड सिंह गुरमीत :– ''एप्रेसल ऑफ टीचिंग सकिल ऑफ प्रॉसपेक्टिव साइन्स एंड सोशियल स्टडी बी0एड0 ट्रेनर इन रिलेशन टू टीचिंग एप्टीट्यूट।'' इंटरनेशनल मल्टीडिशीप्लेनरी ई–जरनल। 2012; 1(9).
6. लता कुसुम :– ''टीचिंग एप्टीट्यूड ऑफ प्रॉसपेक्टिव टीचर ट्रेनर एस रिलेटेड टू दियर लेवल ऑफ एसपिरेशन''। आईआरए– इंटरनेशनल जरनल ऑफ एजुकेशन एंड मल्टीडिशीप्लेनरी स्टडीज। 2017; 7(1):53-62.
7. मिश्रा जी और चिन्होल्कर एल0के0 :– ''ए स्टडी ऑफ रिलेशनसिप ऑफ एकेडमिक अचीवमेंट विथ एप्टीट्यूट, एटीट्यूड एंड एनएक्साइटी। 2014; 2(1)162-173.
8. मुहम्मद अजीम :– ''प्रोब्लम ऑफ प्रॉसपेक्टिव टीचर ट्रेनर ड्यूरिंग टीचिंग प्रक्टिस।'' एकेडमिक रिसर्च इंटरनेशनल। 2011; 1(2).
9. ओकोबिया ओबियाजिली एंड एस्थर :– ''एन एनालिसिस ऑफ द परसीव्ड चेलेंज फील्ड बाई स्टूडेन्ट टीचर्स ड्यूरिंग टीचिंग प्रेक्टिस एक्ससाइज।'' जरनल ऑफ एजूकेशन एंड प्रेक्टिस। 2013; 4(11):7-12.
10. प्रवीण सलीहा एंड मिर्जा नीडा :– ''इन्टर्नशिप प्रोग्राम इन एजूकेशनः इफेक्टिवनेस, प्रॉब्लम्स एंड प्रोसपेक्टस।'' इंटरनेशनल जरनल ऑफ लर्निंग एंड डेवलेपमेंट। 2012; 2(1).
11. साजन एस0के0 :– ''टीचिंग एप्टीट्यूट ऑफ बी0एड0 ट्रेनर एंड दियर एकेडमिक अचीवमेंट एट ग्रेजुएट लेवल'', 2010।
12. सिंह एल0 एंड कश्मीर के0 :– ''टीचिंग एप्टीट्यूट ऑफ बी0एड0 टीचर लर्नर ऑफ हिमांचल प्रदेश इन रिलेशन जव दियर जेन्डर एंड स्ट्रीम''। एकेडमिक रिसर्च जरनल इंटरनेशनल जरनल ऑफ एकेडमिक रिसर्च इन एजूकेशन एंड रिव्यू। 2015; 3(9):241-246.